

Title: Need to declare 'Vedas' the ancient Indian scriptures as 'Rashtriya Grantha'.

श्रीमती सुमित्रा महाजन (इन्दौर): मैं संस्कृति मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहूँगी। आदिकाल से हमारा भारत आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में विश्व में अग्रणी रहा है। हमारा ज्ञान वेदों पर ही आधारित है। वेद हमारी संस्कृति में विशिष्ट स्थान रखते हैं। वेद मनुष्य के चक्षु हैं। वेदरूपी चक्षु को गूढ़ण करके ही व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र के उचित कार्य, व्यवहार संपन्न हो सकते हैं। वेद के पथ सभी के लिए अपेक्षित हैं। वेद ज्ञान सार्वदेशिक, सार्वकालिक, सर्वजनीन सृष्टि की आदि में परमात्मा प्रदत्त ज्ञान है। ज्ञान, कर्म, उपासना और जीवन धर्म की व्यवहारिकता से परिपूर्ण वेदवाणी का ही प्रभाव था कि भारत लाखों वर्ष पूर्व ज्ञान और विज्ञान की दृष्टि से आज से भी कहीं उन्नत और विकसित था। वेद की विस्मृति सत्य और ज्ञान की उपेक्षा है। लाखों करोड़ों लोगों के उत्थान, पतन, पराधीनता और अंधकार के बाद आज इतने वर्षों के बाद भी वेदों का अस्तित्व बना हुआ है। उस पर दुनिया भर में गहन चिंतन हो रहा है। विश्व शांति के लिए वेदों को कारगर माना जाने लगा है। महोदय, इससे यह सिद्ध होता है कि भारत के ऋषि मुनियों के योग द्वारा गहन चिंतन के पश्चात जो ईश्वर प्रदत्त ज्ञान हमें वेदों के द्वारा प्राप्त हुआ है वह आज भी इतने वर्षों के उतार-चढ़ाव के बाद भी वैसा ही है जैसा पहले था। वेद केवल हिन्दुओं का ही धर्मग्रन्थ नहीं है। वेद विश्व के प्रत्येक मानव के चहुँमुखी विकास की बातें करता है, लेकिन दुख इस बात का है कि भारत की संसद अभी भी वेदों को नहीं समझ पाई है। वे केवल वेदों को हिन्दुओं का ही धर्मग्रन्थ मान रहे हैं जबकि वह विश्व के समस्त मनुष्यों की सभ्यता का प्रथम ज्ञान ग्रन्थ है। वेद में न केवल धर्मशास्त्र, वरन् नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, कृषि विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, गणित, ज्योतिष, विज्ञान, पदार्थ विद्या, ब्रह्म विद्या, अपरा विद्या, परा विद्या आदि ज्ञान-विज्ञान की अनेक-अनेक शाखाओं का ज्ञान बीज रूप में विद्यमान है। अतः मैं अनुरोध करना चाहूँगी कि इस बहुमूल्य धरोहर को विश्व ग्रन्थ के रूप में मानते हुए लोक सभा में वेदों की स्थापना कर वेदों को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करें।